NBT
नवभारत टाइम्स

दुनियादारी संडे NBT स्पेशल

प्रिय युवाओं, असली क्रांति कैसी रहेगी?

■ आचार्य प्रशांत

तुम्हारा घाव असली है। उसे असली निदान चाहिए। प्रश्नपत्र का लीक होना तुम्हारे वर्षों की चोरी है। इस चोरी ने युवा जानें भी ली हैं। कोई ईमानदार आवाज उन मृतकों के सामने पहले सिर झुकाए बिना नहीं बोल सकती।

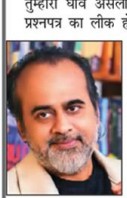

मैं सड़कों पर विरोध के विरुद्ध नहीं हूं। वह दिन आ सकता है जब मैं खुद कहूं, अब मार्च करो। यदि विरोध एक परीक्षा है, तो इस लेख की बस एक शर्त है: पहले सिद्ध करो कि तुम इस परीक्षा में बैठने की पात्रता रखते हो। यहां मांगी जा रही पात्रता पूर्णता नहीं, दिशा है। राज्य कटघरे में खड़ा है। जिस प्रशासन में प्रश्नपत्र न्याय से अधिक तेजी से यात्रा करते हों, वह अपने सबसे प्राथमिक दायित्व में विफल हो चुका है। हर दोषी पर मुकदमा चलाओ। यही जवाबदेही है। आगे जो कहा जाएगा, वह इस निर्णय को एक बूंद भी हल्का नहीं करेगा।

अन्याय की हर घटना में दो पक्ष होते हैं। पहला, वह कर्म जो तुम्हारे साथ किया गया। दूसरा, उस कर्म के उत्तर में तुम क्या करते हो? तुम शिक्षा मंत्री की कठोरतम जांच कर रहे हो। अब वही जांच उस जांच करने वाले पर भी लागू करो। पेपर लीक हुआ। किसी ने उसे बेचा, तो किसी ने खरीदा भी होगा। अगला लीक पेपर जिन विद्यार्थियों तक समय पर पहुंच जाएगा, वे सड़क पर मार्च कर रहे होंगे या उस पेपर को याद कर रहे होंगे?

क्या यह अहंकार की सबसे पुरानी चाल नहीं है कि कर्म के बारे में इतना शोर मचाओ कि कर्ता पर कभी चर्चा ही न हो? मनुष्य भ्रष्ट केंद्र से कर्म करता है। सुधार पुराने कर्म के केंद्र की सफाई है। क्या यह दौड़ इतनी अहम है कि कोई युवा इसके लिए अपनी जान दे दे? साल 2022 में देश में 13 हजार से ज्यादा छात्र आत्महत्याएं दर्ज हुईं। उस साल कोई पेपर लीक नहीं हुआ था। फिर भी बच्चों की मौतें हुईं।

लीक ने उस मशीन को नहीं बनाया जो रैंक को जीवन के बराबर मानती है। सभ्यता अपने 17 वर्ष के बच्चों से कहती आई है कि उनका आत्म-मूल्य उनके स्कोरकार्ड से तय होगा। परिणाम ढहता है तो युवा निष्कर्ष निकालता है कि मैं ही ढह गया हूं। यही निष्कर्ष असली हत्यारा है। जो आंदोलन इस्तीफा जीत ले, लेकिन इस मशीन को ज्यों का त्यों छोड़ दे, वह अगले दौर की मौतों की तैयारी कर रहा है।

जिन लोगों को तुम आज उनकी कुर्सियों से घसीटकर उतारना चाहते हो, उन्हें तुमने ही उन कुर्सियों तक पहुंचाया था। सरकार से जवाब मांगने से पहले एक प्रश्न का उत्तर दो: मतदान केंद्र में तुम कर क्या रहे थे? लोकतंत्र ही एकमात्र ऐसी व्यवस्था है, जिसमें क्रांतियां कैलेंडर पर छपी होती हैं। उन क्रांतियों को चुनाव कहते हैं।

महान मार्च की सुबह तुम कहते हो, 'मम्मी, आज पराठे ज्यादा बना देना, क्रांति करने जा रहा हूं।' बेटा, आटा किसके पैसे से आया है? क्रांतिकारियों के लिए यह पात्रता-परीक्षा है। घर में घोषणा करो: मैं भ्रष्ट रुपया स्वीकार नहीं करूंगा। यह तुम्हारा मार्च रद्द नहीं करती; यह तुम्हें उसके योग्य बनाती है। जो क्रांति सड़क तक पहुंच जाती है, लेकिन भोजन की मेज तक नहीं पहुंचती, वह शुरू ही नहीं हुई।

आधी सदी पहले इस देश ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपना सबसे बड़ा छात्र आंदोलन देखा। उस आंदोलन के युवा नायक दशकों तक राज्यों पर शासन करते रहे। कुर्सी ने केवल उस अहंकार को बड़ा मंच दे दिया, जिस पर उसके स्वामी ने कभी प्रश्न ही नहीं उठाया था। इसलिए पात्रता पहले आती है, मार्च के स्थान पर नहीं, मार्च से पहले।

कृष्ण युद्धभूमि में खड़े थे, आश्रम में नहीं। उन्होंने अर्जुन को बाण चलाने से रोका, और उतनी ही दृढ़ता से उसे भागने भी नहीं दिया। उन्होंने योद्धा को शुद्ध किया और फिर कहा: अब युद्ध करो। कसौटी ईमानदारी है, और ईमानदारी में वर्षों नहीं लगते। पहले अपने आप को जानने की शिक्षा लो। फिर अपने पास बैठे मतदाता को शिक्षित करो। फिर वोट दो। फिर संगठित होओ। फिर चुनाव लड़ो। फिर मार्च करो।

क्रांति शब्द का अर्थ है पूरा पलट जाना। तो पलटो, पूरी तरह पलटो: अपनी ओर। क्रोध कर्ता को वैसा ही छोड़ देता है। केवल प्रेम कर्ता को बदलता है। प्रिय युवाओं, तुम क्रांति चाहते हो और क्रांति चाहना सही है। पर पहले दर्पण, फिर मार्च। फिर बाहर आओ, और मैं भी तुम्हारे बीच मार्च कर रहा होऊंगा।

(आचार्य प्रशांत दार्शनिक और लेखक हैं। उनका कार्य आत्म-अन्वेषण और उसके समकालीन जीवन में अनुप्रयोग पर केंद्रित है।)